अर्जुनगीता



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन

॥ श्रीः ॥

अर्जुनगीता भाषा ।

पण्डित रामरत्नकृत ।

नाना प्रकारके धर्म्म-कर्म्म-ज्ञान-विज्ञान रूपमें अर्जुनप्रति श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द परब्रह्म परमेश्वरका उपदेश ।

खेमराज श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

* बम्बई. *

संस्करण : मई २०१३, संवत् २०७०

मूल्य : २० रुपये मात्र।

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shṛi Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ अर्जुनगीता भाषा ।



दो०—मुख मुरली कर लकुटवर, यदुपतिनंदकुमार।
अर्जुनगीता महतफल, वर्णहुँ तासु विचार॥
गुरु गणपति पद वंदिकर, धर उरमें विश्वास।
गीता ज्ञान नहाय कछु, हृदय करहु मम वास॥
मुक्ति पदारथ संतहित, यह गीता कर प्रेम।
हरियश अगम अपारहै, कहौं मैं चितधरि नेम॥
पहले गुरुको गाइये, जिनगुरु रचा जहान।
पानीसे जिनपिंड रच्यो, अलखपुरुषनिर्वान॥

चौ०—श्रीविष्णुके चरण मनावों। जेहिप्रसाद गोविंद गुण गावों। श्रीकृष्ण अर्जुन रस बानी॥ गुरुप्रसाद कछु कहौं बखानी॥ एक समय आये यदुराई। अर्जुन संगम भो इकठाई॥ धूप दीप ले आरति कीन्हा। चरणोदक माथेपर लीन्हा॥

हाथ जोरि अर्जुन भे ठाढे । प्रेम भक्ति उर आनँद बाढे ॥ संशय प्रभु इक है चित मोरे । कबहुँ सो नाथ दोउ कर जोरे ॥

दो०—तीन लोकके ठाकुर, दीनबन्धु नँदलाल ।
बिनती करौं अधीन ह्वै, भाषो वचन रसाल ॥

चौ०—सुन स्वामी त्रयलोक भुवारा । अर्जुन कछु विनती अनुसारा ॥ सावधान हो सुनो गोसाँईं । मोक्ष यु कवने विधि पाई ॥ कौन कर्म कीन्हे गति होई । सो मो कहहु न राखो गोई ॥ स्थावर जंगम आदि बखानी । कीट पतंग चारिगुण खानी ॥ चारि खानि प्रभु तुमहिं बनाई । सबसों श्रेष्ठ कौन यदुराई ॥

दो०—इनमें को अतिश्रेष्ठ है, सोमोहिंकहो विचार ।
चरण शरण प्रभु राखहू, होहु प्रसन्न मुरार ॥

चौ०—श्रीकृष्ण बोले बिहँसाई । यह संशय तोहिं कहौं बुझाई ॥ कहैं रसाल वचन यदुवीरा । सबसे

दुर्लभ मनुज शरीरा ॥ मानुषमें बड़ ब्रह्म-ज्ञानी। ब्राह्मणते बड़ तपसि बखानी ॥ तपसीसों बड़ सुनौ कुमारा । मोर नाम जेहि प्राण अधारा ॥ निशिवासर जो सुमिरै मोही। तेहिते बड़ा और नहिं कोई ॥ केवल कृष्ण हृदयमों जाने । और बात कछु चित्त न आने ॥

दो०—एकनाम चितमों धरे,सुमिरे निशिदिनमोय।
संन्यासी ब्राह्मण तपसि, तेहि पटतर नहिंकोय ॥

चौ०—अर्जुन बिनवे दोउ कर जोरी। बिनती करौं अल्प बुधि मोरी ॥ तुम प्रभु आदि अंत अवसाना । मो प्रति कृपा करहु भगवाना ॥ तुम जो कहा तपसि बड आहीं। नाम भजनके पटतर नाहीं ॥ यह संशय मोहिं कहौ बुझाई ॥ श्रीमुख सुनो तु मन पतिआई ॥ यहि निमित्त मैं लायउँ सेवा । कहो भेद देवनके देवा ॥

दो०-तपसीतप अधिकारिबड़,ज्ञानध्यानदृढ़सोय ।
नाम भजै जो प्राणि नित,तेहि समान नहिं कोय ॥

चौ०-कहत रसाल वचन यदुराई। सुन अर्जुन तोहिं कहों बुझाई ॥ योगारंभ सुन कुंतिकुमारा । तोसों वचन कहौं निरुआरा ॥ वर्षसहसदश बीते जबहीं । आसन दृढ़ तपसी हो तबहीं ॥ अंतर प्राण त्याग जो कोई। प्रेम पुरुष भेंटे पुनि वोई ॥ पुहुपकली विकसै नहिं पाई। अंतर वास कहांते आई ॥ रामनाम सुमिरन ना करई । कहु अर्जुन कैसे निस्तरई ॥ तपशी तप सुन कुन्तिकुमारा । योग यतीकर इह व्यवहारा ॥

दोहा०-नामकि महिमा जानई, साधे योग अघोर।
काया आछत पावहि,सत्य वचन सुनु मोर ॥

चौ०-अब सुनु अर्जुन कहौं विचारी।नामभजनतें सब अधिकारी॥ रामनाम जो सुमिरन करई । भवसागर सो क्षणमहँ तरई ॥ मोरहु नाम भजै

चित लाई । धर्म अर्थ विद्या फल पाई ॥ जो गृहवास अग्नि सुख पावै । प्राण अन्त वैकुण्ठ सिधावै॥तेहिते अर्जुन सुन चितलाई । नाम भजनते सब सुख पाई ॥ योग महादुख कुन्तिकुमारा। तोसों वचन कहौं निरुआरा॥योगसाधि जो प्राणी ध्यावै । तबहीं अमर परमपद पावै ॥ भंग होय तो पार न पावै । जैसे मारग अन्ध भुलावै ॥ नाम कि महिमा कहत न आवै । क्षण इक भजे अमरपद पावै ॥ अर्जुन सांच सुनौ हमपाहीं । नामभजन समान जग नाहीं॥नाम भजन औ सुमिरन करई। भवसागरसों क्षणमें तरई ॥ मोरहु नाम भजै चित लाई । और करै तौ सहा न जाई ॥ तेहिते अर्जुन सुन चित लाई । रामनामके सब सुख पाई ॥ राम नाम जग अहै अधारा । नाम लेत भवसागर पारा ॥ भक्त हमार प्राणहित अंगा । निशिदिन रहौं भक्तके संगा ॥ सदा फिरौं भक्तनके साथा ।

शंख रु चक्र गदा लिये हाथा ॥ गाय संग बाछा जस धाई । क्षीरकि आश क्षणक ना जाई ॥ सुन अर्जुन समुझावों तोहीं । मोर नाम मोहन अस मोहीं ॥ नाम ब्रह्म चित जाने कोई । आवागमन न ताकर होई ॥

दो०—पर ब्रह्म निश्चय करि, जानो कुन्तिकुमार ।
तीन लोक तारे सही, एक नाम है सार ॥

चौ०—सुनौ प्रथम भाषौं मैं तोहीं॥नाम भजेसो भेटे मोहीं ॥ तेहिते मोरि कछू ना माया । अन्त-काल चित राखों दाया ॥ भक्त हमार सदा हितु आहीं । चारों युग कछु अन्तर नाहीं ॥ भक्ति एक हमहीं करि देखहु। भिन्नभिन्न कबहूँ जनिलेखहु ॥

दो०—भक्त मोर मैं भक्त कर,सुन अर्जुन ठहराय।
एक आत्मा जानहूँ, तोसों कहों बुझाय ॥

चौ०—अर्जुन कहै सुनो यदुराई। येतो जानत हौं मनमाई ॥ भक्त तुम्हैं कछु अन्तर नाहीं ।

यह तो बात विदित सबठाहीं ॥ भक्त तुम्हारि सदा हित आहीं । सो विचार अपने मनमाहीं ॥ संशय एक अहै यदुराई । सो मैं कहौं सुनो चित लाई ॥

दो०—जौन जौन गुण भक्तकर, इसके परे मुरारी ।
सावधान होय स्वामी, सो मोहिं कहो विचारी ॥

चौ०—सुन अर्जुन तैं मन चित लाई । यह संशय तोहिं कहौं बुझाई ॥ सब संशय तोहिं देहुँ सुनाई । जो तुम राखो मन ठहराई ॥ भक्त हमार प्राणसम अंगा । निशिदिन रहौं भक्तके संगा ॥ सदा फिरौं भक्तनके साथा । शंख सुचक्र गदा ले हाथा ॥ और बात कछु कहौं बुझाई । मन वच कर्म सुन मन चित लाई ॥

दो०—मोर भक्तमोहिं चितधरे, नाम जपै दिन रात ।
तेहि कारण सुन अर्जुन, छोडसकों नहिं साथ ॥

चौ०–सुन अर्जुन जो पूछेउ मोहीं । आगे कथा सुनावों तोहीं ॥ अपने मन निश्चयकै लेखहु । जैसे पिता पुत्रकहँ देखहु ॥ जेहिके घर एकौ सुत होई । विपति परे नाछांड़े सोई ॥ पुत्र बाप कर जातक होई । तेहि प्रतिपाल करै सब कोई ॥ सुतको पितु जो मानै नाहीं । विपति परे छांडे ना ताहीं ॥ भक्त हमार धर्मके बापू ॥ तेहि सों अर्जुन अहै न पापू ॥

दो०–भक्त मोर जब बोलई, राम रु कृष्ण मुरार ।
तेहि की जिह्वा स्वर्गते, उत्पति होय हमार ॥

चौ०–अर्जुन बहुरि कहा कर जोरी । परब्रह्म सुन विनती मोरी ॥ जो तुम कहा सोई परमाना । आदि अन्तमें हित कै जाना ॥ श्रीमुखवचन मृषा को करई । हरि ब्रह्मा शिव मेंटि न सकई ॥ मैं बुधिहीन न जानों अन्ता । बल पौरुष तुम ही भगवन्ता ॥

दो०–दयाकरहु गोसाइँजू, कहत अहौं करजोरी।
तुम्हरे चरणकमल चित,सदा रहे मति मोरी॥

चौ०–कहा गोविन्द वचन हितकारी। सुन अर्जुन मनपाहिं विचारी॥ हरि ब्रह्मा सुर देव जुआहीं। मम भक्तनके पटतर नाहीं॥ मैं जहँ जाउँ, भक्त तहँ जाई। औरौ सुधी कोइ ना पाई॥ चन्द्र सूर्य्य वायू अरु पानी। उनहूँ महिमा मोरि न जानी॥ इन कहँ अगम कछू है नाहीं। भक्त मोर पहुँचै क्षणमाहीं॥

दो०–मोर भक्त मोहिं जानई, मैं जानौ तेहि वीर।
चरणरेणु जब लागई, सो भाषो यदुवीर॥

चौ०–सुन अर्जुन यह कथा सोहाई। आदि अन्त तोहि कहौं बुझाई॥ सदा मोर भक्तन सुख वासा। हिरदै बैठ करों परकाशा॥ जो कछु विष्णु मोक्षपद आही। जेतिक मानुष भोजन खाई॥ भक्त मोर छूये जो कोई। तुर्तहिं प्रापति मोंकहँ

होई ॥ जेहि मों भक्त न लावै हाथा । उहै उच्छिष्ट कहै यदुनाथा ॥ सो हमकहँ नहिं पहुँचै भाई । तोसों वचन कहौं समुझाई ॥ भक्त हाथ जो भोग लगावै । ह्वै प्रसन्न हम रुचिसों पावै ॥

दो०—ब्रह्मज्ञान जो मन्त्र है, भक्तहाथ सो आहि ।
कैसहु भक्त जो पाव हो, भलमन्दा कछु नाहिं ॥

चौ०—सुन अर्जुन रस अमृतबानी । भक्त भाव तुहिं कहौं बखानी ॥ जो कर मम भक्तन मन्दाई । ताकर वंश नाश होइ जाई ॥ तिन दिन तीन पक्ष जो होई । तीन मास बाचे ना कोई ॥ इतना दिन जो बाचै कैसेहु । तीन वर्ष उबरे नालेसहु । जो इतने महँ दण्ड न देऊ । गदा चक्र फिर हाथ न लेऊं ॥

दो०—भक्तकष्ट मोहिं व्यापई, रोमरोम सब अंग ।
तेहि कारण सुन अर्जुन, छांड़ सकों नहिं संग ॥

श्रीस्वामी जगजीवन, दीन बन्धु नँदलाल ॥
औरहु गुण कहि भक्तकर, दया करो गोपाल ॥

चौ०–सुन अर्जुन मैं कहौं विचारी। तुम तो मोर प्राणहितकारी ॥ जो हम कहहिं सत्य करु सोई। पूर्व पुण्य बिनु भक्ति न होई ॥ पद्मपत्र जौने विधि विकसे। मोर भक्त पारथ सुनु तैसे ॥ वही भांति जब ऊदित होई। प्रेम भक्तिपद पावै सोई ॥ तेहिमहँ गुरुमुख सदा कराई। चरण-कमल पातक क्षय जाई ॥

दो०–रिस ना करोगोसाइँजू, चरणछुवतहौंश्याम।
केतिक गुरु करिये प्रभु, केतिक लीजे नाम ॥

चौ०–यह सुनि हर्षि भे वनवारी। अर्जुन देखौ मनहिं विचारी॥ एकै गुरू विष्णुसम आही। तीन लोकके पटतर नाहीं ॥ एकै नाम सदा चित देई। चौदह भुवन वश्य करि लेई ॥ गुरू सोई जो लागे काना। तेहि कहँ जाने विष्णु समाना ॥ सोई परम तत्त्व करि जाने। और बात कछु

चित ना आने ॥ गुरुको मन्त्र जु भूले कोई । मुखते सिखे दोष ना होई ॥ सत्य गुरू करिये दुइ चारी । ज्ञान गुरू सब सिखे बिचारी ॥ आन गुरूमुख कान जु लागे । कोटि जन्म शिर पातक जागे ॥ चौगुण पाप गुरूको होई । माया लोभ करै जो सोई ॥ गुरु शिष जाने मैं भल कीन्हा । यमके फांस हाथमों लीन्हा ॥

दो०—अर्जुन कहागोसाइँजू, कैसे जिव पतिआइ ।
गुरू कान जहि लागई, कैसे यमपुर जाइ॥

चौ०—सुनु अर्जुन तोहिं कहौं बुझाई । जैसे होर जीव पतियाई ॥ पुत्र आनकर आपन करई । सो प्राणी कैसे निस्तरई ॥ जैसे तिया सोहागिन होई । स्वामी छांड़ि और सँग सोई ॥ पहिले दुइ कुल नाश करावे । जहाँ जाय तहँ अपयश पावे ॥ जगमों यश एकौ नहिं पावे । प्राण अंत यमलोक सिधावे ॥ दुइ नौका पग देइ जु कोई । मांझ धारमें बूड़े सोई ॥ प्रथमे मंत्र गुरू जो

दीन्हा । तेहिते नेम धर्म ना चीन्हा ॥ औरौ मंत्र देइ जो कोई । तौ जगमाहिं दोष तेहि होई ॥

दो०—यह सब दोष गुरून कहँ, शिष ना जानेकोय ।
कुम्भीपाकसु नरकमहँ, निश्चय प्रापति होय ॥

चौ०—सुनि अर्जुन निश्चय चित दीजै । कथा रसाल श्रवण सुनि लीजै ॥ नाना वेद पढ़े जो कोई । गुरुमुख वचनसमान न होई ॥ गुरुकहँ पूँछ जाय जहँ जाने । भव चिंता हिरदै नहिं आने ॥ चारि वेद मुखपाठ बखानी । अन्तर गती मोहिं नहिं जानी ॥ कहत वेद सब जन्म गँवावै । नाम भजन बिनु मुक्ति न पावै ॥ निश्चय नाम जु चितहि लगावै । क्षण इक भजे परमपद पावै ॥ कागभुशुण्ड अमरपुर गयऊ । मायाछत्र हृदयमों भयऊ ॥ वामे अंग शयन जो करई । चित लगाइ गोविंदसों रहई ॥ अच्छे वचनन हरिके कहई । तेहि समान जग कोई न

अहई ॥ सिद्ध समाधि लगावै कोई। नामकि महिमा जानत सोई ॥ भूमि समान दान जो करई। योजन लक्ष नाम सो धरई ॥ नामकि महिमा जानै जोई। जो जानै सो हमसम होई॥

दो०—तीरथ व्रत अरु यज्ञ करि,बहुत विचारे वेद।
शतशःयोजन नामते, जाइ रहा सब भेद॥

चौ०—जिन ब्रह्मा सन सृष्टि सँवारी। नाभि-कमलते भये हमारी ॥ ब्रह्म न होय वेद सब कहई। नाम मोर हिरदैमों धरई ॥ विद्या वेद सब भलेन सोई। भोजन रस जाने कस होई॥ श्वपचौ भक्त मोर जो होई। तेहि समान अर्जुन ना कोई ॥ इह पृथ्वीमें को ना भयऊ। कोटि कोटि युग यहि विधि गयऊ ॥ विष्णुकि माया यहि संसारा। नामनाश ना होइ कुमारा ॥ सुन अर्जुन मैं कहों बखानी। नामकि महिमा हमहुँ न जानी ॥ सुन पारथ समझावों तोहीं। नाम भजे सो भेंटे मोहीं ॥

दो०—कहत खोरिमोहिंलागई, सुनोवचन भगवान।
महिमा तुम्हरे नामकी, कैसे जाने आन ॥

चौ०—सुन अर्जुन तैं मन चित लाई। यह संशय तोहिं कहौं बुझाई॥ नाना जन्म मोर जो होई। अन्त काल कहि सके न कोई॥ औरौ बात सुनो हमपाहीं। जन्म भये कछु कारज नाहीं॥ जहँवां भक्त मोर गुण गावै। हमहिं तहां निश्चयके पावै॥ तीरथ व्रत विद्या है कैसा। इन्द्रायन फल देखिय तैसा॥ आसन बैठ मोर गुण गावै। कोटि तीर्थ तेहिकहँ ना पावै॥ लक्ष्मी सरस्वति अंगमों आहीं। नामकि महिमा जानत नाहीं॥

दो०—चंद्र सूर्य अरु पवन जल, नवग्रहादिक तन्त्र।
माया मोरि न जानहीं, कोटिन जपे जो मंत्र॥

चौ०—अब सुन अर्जुन कहौं बखानी। राम-नाम सम अमृत बानी॥ नाम सुमिरि शिव

अम्मर भयऊ । जरा मरणकर संशय गयऊ ॥
नामकि आश वासुकी कीन्हा ॥ तिल समान
धरती तिन्ह लीन्हा ॥ रामनाम ध्रुव सुमिरण
कीन्हा । पदवी अचल ताहिको दीन्हा ॥ सुर मुनि
जानत हैं कछु भेऊं । तेहि कारण मैं दर्शन देऊं ॥
दो०—रामनाम निश्चय करिय,जानो कुन्तिकुमार।
चारि वेदसों अर्जुन, दुइ अक्षर हैं सार ॥
राधारमण गोसाइँजू, यदुपति नन्दकुमार ।
कविता स्तुति भाषऊँ, प्रभु मोहिं करो उधार॥
चौ०—श्रीगुरु विष्णू चरण मनावों । जिन्ह
प्रसाद गोविंदगुण गावों ॥ धन्य गुरू जिन्ह विद्या
दीन्हा । जेहि प्रसाद गोविंदहि चीन्हा ॥ गुरू
विना कछु धर्म न होई । कोटि प्रकार करै जो
कोई ॥ गुरू विना कोई पार न पावै । जैसे
मारग अन्ध भुलावै ॥ गुरु हिरदे मों तत्त्व
लखावै । गुरु दयाल होइ पंथ बतावै ॥

गुरु जस नाव खेमनेहारा। भवसागरतारन इस पारा॥ गुरू विना कैसे कै तरई। नाव विना केवट का करई॥ गुरू विना अन्धा जस होई। भला बुरा चीन्हें ना सोई॥ जो नर गुरु-मुख भया न होई। मिथ्या जन्म ताहिकर सोई॥ श्रीस्वामी त्रिलोकके नायक। दुष्टदलन सन्तन-सुखदायक॥ सुमिरों ताहिं सदा सुखदायक। अन्तगती चित जाने नायक॥ जाकी महिमा शेष बखानै। नर बपुरा कैसे कछु जानै॥ शङ्कर सुमि-रत पार न पावै। नारद ध्यान सदा गुण गावै॥ चारौं युग ब्रह्मागुण गाये। आदि अन्तको पार न पाये॥ ऋषि मुनिवर गुण गावैं जेते। और देवता रागन तेते॥ सूर्य आदि सुरपति गुण गाये। ध्रुव प्रह्लाद अमरपद पाये॥ इन्हकर भक्ति अन्त किन्ह पायउ। सतयुग त्रेता द्वापर गायउ॥ कलियुगमों सन्तनसुख दीन्हा। घर बैठे प्रभु

दर्शन कीन्हा ॥ रामानन्द कबीर गोसाँई । इन्हकर महिमा कहिन सिराई ॥ पीपा भगत रु मीराबाई । इन्हकेरी हरि भली बनाई ॥

दो०--बहुतभक्त कलिमों भये, कहँलगिकरोंशुमार।
सबकी आशा पुरइ दी, यदुपतिनन्दकुमार॥

चौ०--मैं बपुरा जस पशु अज्ञाना । वर्ण विवेक नहीं कछु जाना ॥ इनकर का मैं करों बखाना । गुरु-प्रसाद कछु चीन्हा ज्ञाना ॥ गुरू मोर जो सम्मुख अहई । इह भवसागर क्षणमों तरई ॥ इन्हकर महिमा कहत न आवै । जो गुरु कहै तैस फल पावै ॥

दो०--जगन्नाथ गुरुदेव हैं, जिन्ह यह विद्या दीन्ह।
तिनकी चरणनरेणुका, कुशलसिंह सो लीन्ह॥

चौ०--अर्जुन बात कहत बिलगाई।बीचहि बीच कवी स्तुति लाई ॥ कुशलसिंह भक्तनके दासा । प्रभुके चरणरेणुकी आसा ॥ वेद पुराण पढ़ा कछु

नाहीं। ज्ञान ध्यान कछु मन ना आहीं॥ एक समय मोहिं इच्छा कीन्हा। गुरुजू मोकहँ विद्या दीन्हा॥ अस कछु दाता कीन्ह गोसाईं। प्रभुकी सुस्तुति करों बनाई॥ इतो कहत मोहिं आलस भयऊ। आई नींद भूमि परि गयऊ॥ सोवत समय परीक्षा पाई। गुरुके रूप ठाढ भो आई॥ कहे कि सोच करसि जनि बारा। हम आज्ञा करि जान बिचारा॥ चरण परसिके सेवा कीन्हा। इह अन्तर बोध्या कछु दीन्हा॥ उठि बैठ्यो कोउ देखु न पासा। गीताज्ञान हृदय परकासा॥ रोम रोम पुलकित भइ काया। भयो ज्ञान कछु गुरुकी दाया॥

दो०—गुरु जो आज्ञा कीन्हेउ, गीताज्ञान अपार।
सब मिथ्या करि जानेउ, एक नाम है सार॥

चौ०—कविताकी स्तुति पूरण भयऊ। कहत सुनत पातक क्षय गयऊ॥ अर्जुन बहुत जनावे

सेवा । सुनहु वचन देवनके देवा ॥ श्रीगोविन्द गोवर्द्धनधारी । गोपीवल्लभ देव मुरारी ॥ श्रीत्रिलोकके अंतरयामी । भक्तन हेतु निरंतर स्वामी ॥ कैसे कै गति होइ गोसांई । मोहिं सु साँच कहो यदुराई ॥ केतिक पाप दोष कितनाई । सो संशय प्रभु रहो बुझाई ॥

दो०—केतिक पातक करे नर, कवन दंड है ताहि॥
हृदयागती विचारकै,प्रभुभाषो मोहिंपाहि॥

चौ०—अर्जुन सुनो कहौ मैं तोहीं । जो अति हित करि पूछेउ मोहीं ॥ शतशः पाप प्राणि जो करई । लुञ्ज होय यदुपति अस कहई॥सहस पाप मुख बाउर होई । वचन कहै बूझै ना कोई । इक लख पाप करै जो कोई। कञ्चन काया कुष्ठी होई । यहि विधि पाप करै दशगूना । बहिरा होई श्रवण नहिं सूना ॥ कोटि पाप कर आँधर होई । भला बुरा चीन्है ना कोई ॥ दस सहस

पातक जो करई । घर घर भिक्षा मांगत फिरई ॥ मांगे भीख न पावै प्राणी । ताके पाप लखे ना आनी ॥ ताके पाप करै जो लेखा । सुनु अर्जुन मैं आंखि न देखा ॥

दोहा–जैसा पातक करै नर, तैसा तेहि सन्ताप ।
श्रीमुखवचन सुना जबै, अर्जुन चितमों व्याप॥

चौ०–सुनि अर्जुन श्रवणन चित दीन्हा । सावधान मन निश्चय कीन्हा ॥ इन पापनते यह गति होई । औरौ वचन कहौं मैं तोही ॥ कोटिन पाप करै जो प्राणी । संतत अंध अधमके जानी ॥ ताकर मुख भोरे ना देखे । महापाप अपने शिर लेखे ॥ जो मुख देखि करै अस-नाना । द्वादश रति सोना दे जाना । अंतकी पात कहब ना ताही । इहमों कछु बेवरा इक आही । तेहिके वचन उतर जो देई । महापाप अपने शिर लेई ॥ द्वादश न्हानकरै जो कोई ।

तौ पताकते उग्रह होई ॥ शुभ कारज बोले जो कोई । निश्चय नाश काम सो होई ॥ सुनु अर्जुन जो पूछेउ मोहीं । वंध्यादोष कहौं मैं तोहीं ॥

दोहा—अर्जुन कहा विचारिकै, सत्य कहो यदुराय।
अपुत्रीक प्राणीनकर, जन्म अकारथ जाय ॥

चौ०—अर्जुनसों कहहीं यदुराई । अमृत वचन सुनो मन लाई ॥ मोर वचन अंतर सुख पावै। ताहि मंत्र मैं सदा पढ़ावै ॥ वंध्या धर्म अंत ना आही । सातजन्म दण्डे यम ताही॥अवगुण कोटि कहां लगि कहई । ताकर भार भूमि ना सहई ॥

दोहा—महापातकी ताहि कहँ,जानौ कुन्तिकुमार।
जन्म जन्म दुख पावही, तरे न इह संसार ॥

चौ०—तब अर्जुन उठिके कर जोरा। स्वामी सुनो वचन इक मोरा ॥ विनती मोर सुनो भगवाना । सबको जानो एक समाना ॥ निर्वंशी जेतिक जग आहीं । धर्मवंत कोउ अहै कि

नाहीं ॥ भला बूरा सब है यहि ठाँई । सबकर भेद कहो यदुराई ॥

दोहा–उत्तममध्यमजानिके, प्रभु मोहिं कहोबुझाय ।
तुमहि विना जगजीवन,आनहि पूछों काय ॥

चौ०–सुन अर्जुन मन ज्ञान बिचारी । यह संसार तोहिं पार उतारी ॥ जो शंका तै पूँछेसि मोहीं । सो वृत्तान्त कहौं मैं तोहीं ॥ निर्वंशी प्रानी जो होई । साधुसंग पावे जो सोई ॥ भाव भक्ति जो चितमों धरई । निर्मल ज्ञान हृदयमों परई ॥ भाव भजन करई मन लाई । ताकर पाप सबै क्षय जाई ॥ जहां कथा कोइ हमरि चलावे । तहां जाय निश्चय चित लावे ॥ काम क्रोधको चित नहिं धरई । ब्राह्मण गौकी रक्षा करई ॥ भक्त मोर जहँ परगुण गावे । तेहिके चरण जाय चित लावे ॥ धर्म कर्म निश्चयके जाने । मुक्ति होय संशय नहिं आने ॥ अन्य

जीवमों दाया राखै । सत्य वचन सो सब दिन भाखै ॥ भक्ति मोर जो मनमों धरई । नाम मोर जो सुमिरन करई ॥ हिरदै सदा मोर गुण गावे । निर्वंशी वैकुण्ठ सिधावे ॥ औरहु बात कहौं मैं तोहीं । हिलैं न तृण बिनु आज्ञा मोहीं॥

दो०—निर्वंशी अर्जुन सुनहु, जेतिक जगमें आहि ।
तेहिमें जाके भक्तिहै, सो वैकुण्ठहि जाहि ॥

चौ०—अर्जुन कहै दोउ करिजोरी । संशय प्रभु उपजे चितमोरी॥जन्म तु जगमों आखिर होई । पाप किये बिनु रहा न कोई ॥ तेहिते मोमें भो सन्तापा । कैसे देह होय निष्पापा ॥ पापी नाम लेहु यदुराई । ताकर पाप कवन विधि जाई ॥ औरौं बात कहौं मैं स्वामी । तीन लोकके अन्तर्यामी ॥ गऊ विप्र हत्या जो करई । केतिक दिनमों पुनि निस्तरई ॥ तिरियाहत्या जो नर करई । सो प्राणी कैसे निस्तरई ॥

दो०—यहसंशय जगदीशजू, मोहिंमनउपजीआय।
भिन्नभिन्नकै स्वामिजू, सो मोहिं कहौ बुझाय॥

चौ०—अर्जुन सुनो एक चित लाई। पुरविल कथा कहों समुझाई॥ गोहत्या प्राणी जो करई। ज्ञान ध्यान कीन्हें नहिं तरई॥ तीरथ व्रत जु करै तब आई। युग बीते बिनु पाप न जाई॥ अच्छे वचन कहे यदुराई। सुन अर्जुन तू मन चित लाई॥ त्रियहत्या पातक अधिकाई। चारों युग बीते क्षय जाई॥ विप्रवधन पातक अधिकाई। गीता सुन बिनु पाप न जाई॥

दो०—इनकर यह व्यवहार है, सुनअर्जुन मनलाय।
ऋणहत्या अतिकठिनहै, दियेबिना नाहिंजाय॥

चौ०—अर्जुनसों कहहीं यदुराई। ऋणहत्या कैसेहु ना जाई॥ दियो विना सो छूटत नाहीं। तेहिमें एक बेवारा आहीं॥ साधु पुरुष ऋण काढै कोई। दण्डभण्ड करि बाचे सोई॥ इममें

लीन प्राणी जो रहई । ऋणचिन्ता निशिवासर करई ॥ साधुसंग मोरे गुण गावै । प्रेम भक्ति हिरदयमें लावै ॥ एक चित्त जो मोपर राखै । भला बुरा मुखते नहिं भाखै ॥ भाव भक्तिके सेवा लावै । माँगे द्रव्य और कछु पावै ॥ जेहि विधिऋणते उग्रह होई । निशिबासर उद्यम करु सोई ॥ विधि कारण सो उग्रह करई । कछुमों कछुऋण शोधत रहई ॥ द्रव्य होय उद्यम करु सोई ॥ जो कछु जुरे सो दे पहुँचाई ॥ धाय धूप ऋण होय न पारा । तेहिको दोष अहै कुमारा ॥ जेहिके चित्त सदा अस आहीं । टूटे ऋण चिन्ता कछु नाहीं ॥ साहुसो सांच रहै मनमाहीं । मन्दा होय तो पहुँचै ताहीं ॥ तेहि प्राणी कहँ जम ना लेई । अगिला जन्म सुखित सो देई ॥ साहूकार जो धरता होई । और जन्म ऋण पावन सोई ॥ साहु जो ताकर धरता होई । तो आये खाये सुख सोई ॥

दो०—ऋणकरयहवृत्तान्तहै, सुनअर्जुन चितलाय ।
जहां आश है जाहिकर, तहां देउँ पहुचाय ॥
चौ०—अर्जुन कहै सुनौ भगवाना । यह तौ उत्तमकर परमाना ॥ उत्तम बुधि ऋण करजा होई । पुनि उत्तम गति पावै सोई ॥ ऋण काढै औ पापी जाना । सो कस गति पावै भगवाना ॥
दो०—धर्मवन्त ऋण काढ़ई, पायउ ताकर अन्त ।
पापी जन जो लेइ ऋण, कहो तासु बिरतन्त ॥
चौ०—अर्जुन सुनो एक शुभबानी॥ यह ब्योरा तुहिं कहौं बखानी ॥ ऋणको काढ दान दे कोई । मिथ्या अहै उचित ना सोई ॥ ऋण काढै पाले परिवारा । सो मिथ्या नहिं जाय कुमारा ॥ ऋण खाये झूठापन करई । नीच प्रसंग त्रिया पर हरई ॥ चीकन चाकन फिरै उतंगा । नारी छांडी वेश्या संगा ॥ साहू आवत देखे जबहीं । वदन छिपाय रहे पुनि तबहीं ॥ खाय पिये ऋण

देन न चाहै । यमकर फाँस निशा दिन राहै ॥ यमकर दूत सदा सँग रहई । थोरे दिनमों प्राणी मरई ॥ प्राण अन्त तेहि यम ले जाई । तेहिकर सो स्तुति करे बनाई ॥ चामर कोड़ा कंठ लगावे । पन्थमाँहि घिसिलावत लावे ॥ पहिले लै सेमरमों बांधै । तप्त फार तेहि मुखमों साधै ॥ लोहकी लाठी सो पिटवाई । अंग अंग काँटा चुभि जाई ॥ तहवाते पुनि ताहि ले आवे । तावा पर तेहि आनि बिठावे ॥ तेहिके पर पुनि आग लगावै । ऊपर तेल आनि ढरकावे ॥कष्ट अनेक देहि तेहिं भारी । नरक कुण्डमें राखहिंडारी ॥

दो०—केतिकदिनतेहिनरकमहँ,तहँतेकाढ़पुनिलेहिं ।
दण्डभण्ड पुनिकरहिके,जन्म नीचघर देहि ॥

चौ०—पुनि यहि जगमों सो निस्तरई । धरता होय तबहि वहि भरई ॥ और बात सुन कुन्तिकुमारा । तेहिप्राणी कर यह व्यवहारा ॥ सुन

अर्जुन औरौ कछु भाखों। मैंतोहिसों कछु अन्त न राखों॥ आधा अंग मोर तैं आही। तेहिते अंत कहौं तोहिं पाही॥ तीन लोक मम उदरहिं माहीं। सबकर तन्त्र मन्त्र मोहीं पाही॥ यह संसार जहाँ लगि होई। मम आज्ञा विनु अहै न कोई॥ नित उठि भोजन सबको देऊं। सबकी खबर साँझको लेऊँ॥ जौन अहार जन्तु जो खाई। ताको तैस देऊँ पहुँचाइ॥ मम आज्ञा विनु आन न पावै। कोटि भाँति नर युक्ति बनावै॥ सबको आश हमारी अहही। सुन अर्जुन तोसों सत कहही॥ कीट पतंगमों बास है मोरा। शंख चक्र लक्ष्मी लिय कोरा॥ जहँ लगि जीव जगतमों होई। छोट बड़ा बाचै ना कोई॥ सबके घटमों मोर बसेरा। धर्म पापके करों निबेरा॥ छोट जीवमों छोटबसेरा। बड़े जीवमों बड़ो बसेरा॥

दो०-एक आत्मा जानहू, दूसर तिहुँपुर नाहिं ।
कहीं गुप्त कहीं प्रगट है, सुन अर्जुन चितमाहिं ॥
चौ०-अर्जुन कहै दोउ कर जोरी । आदिअंत शरणागत तोरी ॥ श्रीयदुपति त्रिभुनके करता । शत्रुदलन सन्तन दुखहरता ॥ आदि अन्त भक्तन भयहारी । सबमों व्यापित देव मुरारी ॥ जो तुम कहा सोइ मैं जाना । औरहु कथा कहो भगवाना॥
दो०-धर्म जन्म कवने बिधि, कैसे जन्मे पाप ।
सो स्वामी कहिदेहु मोहिं, उपजे बड़ संताप ॥
चौ०-अर्जुनबात कहाँलगि जानसि। खोजि खोजि सब अर्थन आनसि ॥ जवनि बाततैंपूँछहि मोहीं । सबकर भेद कहौ मैं तोहीं ॥ धर्म जन्म जेहि विधि होई। सुन अर्जुन बर्णौं मैं सोई ॥ सत्यते धर्म उग्र यश होई । दया करे जन्मैं सोई॥क्षमाते धर्म बाल जस रहई । लोभ तेज तो बैठत अहई॥ काम वस्तु सम्पूरण होई । उत्तम गति पावे पुनि सोई ॥

दो०—अर्जुन कहा गोसाँइजू, संशय छूटत नाहिं।
लोभ काम संसारमों, कौन करत प्रभु आहिं॥

चौ०—जो अर्जुन तैं पूँछसि मोहीं। निर्णय याहि सुनावौं तोहीं॥ कामी पुरुष जगत्‌में होई। त्रिया आपनी भोगे सोई॥ परतिरियाके संग न जाई। साँचे वचन कहै यदुराई॥ माया अपनी खाय खिलावै। परका देखि न चित्त डुलावै॥ यह दुइ पाप सँपूरण होई। सुन अर्जुन निश्चय चित लोई॥ प्रथमैं पाप क्रोध जनवावा। दया विना सो बड़ा कहावा॥ इतना जानि नहीं जो माने। अर्जुन सो चंडालहि जाने॥

दो०—यहि विधि जानो अर्जुन, पाप पुण्य उत्पात।
तैं तो मोर प्राण हित, कहौं भेद बहु भाँत॥

चौ०—अर्जुन ठाढ़ भये प्रभु आगे, श्रीगोविन्दके चरणन लागे॥ श्रीयदुराइ राखि मोहि लीजै। यहि संसार पार प्रभु कीजै॥ एक बात कर

संशय आही । रिस ना करब कहब हम पाही ॥
दो०–वेदन विषे विचारिकै,मोहिं कहो नँदलाल ।
कौन कर्मके कियेतें, प्राणी हो चांडाल ॥

चौ०–अर्जुन सुनहु कहत भगवाना । इतनी बात सुनो परमाना ॥ ब्राह्मण ब्रह्मकर्म नहिं राखै । देवलोक सबही प्रति भाखै ॥ विना दँतूअन भोजन करई । तेहि चंडाल यदुपति असकहई ॥ देवता पूजे बिन पग्ग धोये । अर्जुन सुन चण्डाल है सोये ॥ जाकर मातु पिता बृध होई । सेवा करै पुत्र ना कोई ॥ ताही काहिं मृतक के जानहु । अर्जुन सो चंडालके मानहु ॥ पूरण गर्भ त्रिया भै आई । ताकर पुरुष संगतिहि करई ॥ हत्यातुल्य पाप हैं ताही । अर्ज्जुन सुनु चंडाल सो आही ॥ आगलगावत देह जराई । सुरापान निशिवासर खाई ॥ महापाप निश्चयके जाना । सो अर्ज्जुन चंडाल समाना ॥

बाछा गाय बिछोह करावे । सो प्राणी चण्डाल कहावे ॥ अर्जुनसों कहहीं नँदलाल । पक्षिनमों कागा चण्डाल ॥ पशुअनमों गदहाको जानो । वनस्पतिनमों तार बखानो ॥ पानी पियत गाय खेदावे । सो प्राणी चण्डाल कहावे ॥ तेल लगाय न करै जो स्नाना । सो प्राणी चण्डाल समाना॥ रति करिके न करै जो स्नाना । सोप्राणी चण्डाल समाना ॥ सुनु अर्जुन जो पूछेउ मोहीं । यह तो भेद कहा मैं तोहीं ॥

दो०–अर्जुन कहा गोसाइँजू यह जान कछु नाहिं
कौन दानके दियेते कौन पुण्य है ताहिं ॥
अधमउधारन स्वामिजू, निश्चल नाम तुम्हार ।
तुमही जगके जीवन, प्रभु मोहिं करो उधार॥

चौ०–श्रीगोविन्द युक्तिउपजाई ।अर्जुन पूछचो कथा सोहाई ॥ हित करि अर्जुन पूछेउ मोहीं । दानकि विधि सब भाषों तोहीं ॥ दस गौ दान

देइ जो कोई । धेनु एक दीन्हे फल होई ॥ धेनु दान देइ दश जो कोई । साड़ एक दीन्हे फल होई ॥ साँड़ दान दश देइ जो कोई । व्यापिख एक दिये फल होई ॥ दश व्यापिख दान कर जोई । कन्या दान दिये फल होई ॥ दश कन्या देइ दान जो कोई । बिगहा भूमि दिये फल होई ॥ दान ध्यान कहि ज्ञानके लेखा । आसन जपकर सुनो विशेखा ॥

दो०—जोतिक दान करै नर, तेहि फल पावे सोय ।
शालग्रामके दानसम, और दान ना कोय ॥

चौ०—तेहिक्षण अर्जुन सेवा लाई । दानकिविधि जाना यदुराई ॥ जो श्रीमुख प्रभु कहा बखानी । सो मैं जानेऊँ शारँगपानी ॥ श्रीयदुपति त्रिभुवन-के करता । पतितपावन दरिद्र दुखहरता ॥ उर धरि नाम पतित तरि जाई । अवागमनसों जाय नशाई ॥ होय प्रसन्न शरण मोहिं राखहु । विनती

करों और कछु भाखहु ॥ काहे कर आसन प्रभु होई। नाम तुम्हारा करै जप सोई ॥

दो०–काहे कर आसन करै, जपै तुम्हैं रघुवीर।
भिन्नभिन्न के स्वामी, सो भाखो यदुवीर ॥

चौ०–सुन अर्जुन निश्चयके भाखो। मैं तोहिं कहऊँ हिरदैमों राखो ॥ आसनकी विधि पूँछेहु मोही। सो सब भेद कहौं मैं तोहीं ॥ बस्तआसन ध्यान लगावे। दुखी होय कछु फल ना पावे ॥ पत्थर आसन जपै जो कोई। अर्जुन सुनो सो रोगी होई ॥ भूमी आसन जपै मोर नामा। वहिकर पाप पुण्य नहिं ठामा ॥ यहि आसनकर यह गुण होई। निश्चय अर्जुन मानो सोई ॥ औरो आसन सुनो कुमारा। उत्तम गति पावहि संसारा ॥ मृगछाला आसन बैठावे। करै भजन मुक्तिहि गति पावे ॥ तेहिपर बैठ जपै मम नामा। सुत कलत्र देऊँ धन धामा ॥ मुनिनकेर आसन

जो आहीं। मानुष महिमा जानत नाहीं॥ कुश आसन जो ध्यान लगावै। ज्ञानी होय सिद्ध फल पावै॥ कमलासन जप करता कोई। नेम धर्म विद्या फल होई॥

दो०–तब अर्जुन मन सोचिके, कहा सुनो यदुराय।
सदा सँयोग न पावै, ताकर कवन उपाय॥

चौ०–श्रीहरि अर्जुन कह समुझाई। सदा सँयोग आसन नहिं पाई॥ तेहिकर एक अहै परकारा। सो मोसे सुनु कुन्तिकुमारा॥ तृण इक जहां तहांते आने। द्वादश अंगुल नापि प्रमाने॥ तेहिकर आसन करै कुमारा। बैठ जपै तहँ नाम हमारा॥

दो०– अर्जुन कहा गोसाइँजू, इतना करै तो होय।
भक्ति भाव जो जानही, तबहिं उचितहैसोय॥

चौ०–अर्जुन पूजे दोउ कर जोरी। औरौ कछु विनती प्रभु मोरी॥ आसनविधि पूछेउँ भग-

वाना। तुम परदास भेद कछु जाना॥ भजन भेद भाषो यदुराई। भला मन्द जैसा श्रुति गाई॥ कवने माल कवन गुण भाई। सो स्वामी मोहिं कहो बुझाई॥ केतिक माला भजन तुम्हारा। सो मोहिं भाषो नंदकुमारा॥ जौने माल जोइ गुण होई। दया करो प्रभु भाषो सोई॥

दो०—सुनु स्वामी जगजीवन, यदुपतिनन्दकुमार।
भजन भेद नहिं जानहूँ, श्रीमुख कहो विचार॥

चौ०—सुन अर्जुन निश्चय चित लाई। भजन भेद तोहिं कहों बुझाई॥ अँगुरी रेखा भजन जो करई। अष्टगुणा फल प्रापति अहई॥ मोति माल जो सुमिरे मोहीं। द्वादशगुण फल प्रापति होहीं॥ मणिमाला सुमिरे जो कोई। पंद्रह गुण फल प्रापति होई॥ कमलकिमाला जपै जो कोई। सहस्रगुण बल ताकर होई॥ सुवरण माला स्तुति लावै। एक कोटि फल ताकर पावै॥

कुशगाँठि माला जप जो करई । दश कोटी गुण ताकर अहई ॥ पद्म फल माला जपै जो कोई । बारह लक्ष तेहिके गुण होई ॥ रुद्राक्षमाला जपै जो कोई । बारह कोटि फल पावै सोई ॥ तुलसीमाल जपै फल पावै । सो अर्जुन मोहिं कहत न आवै ॥ हिरदै अंतर सुमिरन करई । तेहि समान अर्जुन ना कहई ॥

दो॰–भजनभेद सब भाषेऊँ,सुन अर्जुनचितलाय ॥
अवरहु कछु जो पूँछहूँ, सो मैं देऊँ बताय ॥

चौ॰–अर्जुन कहै सुनो बनवारी । और कहौ पीताम्बरधारी ॥ केहिके छुए दोष होय स्वामी । सो विचार कहो अंतर्यामी ॥ मैं अज्ञान कछु अंत न जाना । तुम प्रसाद पाई बुधि ज्ञाना ॥

दो॰––है प्रसन्न प्रभु भाषहु, हृदयकरो जनि रोष।
केहिके छुये कवन विधि,तब तेहि लागै दोष ॥

चौ०–अर्जुन सुन तैं मनठहराई। यह संशय तोहि कहौं बुझाई॥ माखी विष्णु अंश जो आही। तेहि बैठे कछु दोष न आही॥ देवनके भोजन छुइ जाई। है निश्चिन्त सो भोग लगाई॥ भक्ष्याभक्ष्य मजारी खाई। ओही मुख भोजन छुइ जाई॥ यहि बातन कछु दोष न आवै। होय निश्चित सो भोग लगावै॥ नीच नारिसँग शयन जो करही। अंत मिलै कछु दोष न आही॥ बात कहत मुखथूँक जो परई॥ तेहि पर दोष कछू नहिं अहई॥ हाथ एक तृण राखै जोई। चण्डाल धरै ब्राह्मण घर सोई॥ अर्जुन सत्य सुनो हम पाहीं। तेहिकर दोष कछू ना आही॥ अर्जुन कहै सुनौ भगवाना। एक वृक्ष पर अछोप जाना॥ ब्राह्मण चढ़ै शूद्र चढ़िजाई। ताकर दोष कहो हम पाई॥ अर्जुन बात सुनो हम कहई। तेहिकर दोष कछू ना अहई॥ नाव एक दिशि हांड़ी जो होई।

अन्न रांध खावे जो कोई ॥ तेहिमों दोष कछू ना पाई । निश्चय वचन कहै यदुराई ॥ ब्राह्मणकेरि त्रिया जल देई । अछोप अपने बासन करि लेई ॥ दोष न अहै कृष्ण अस कहई । द्वादश अंगुल बीच जो रहई ॥ सेज भूमिपर सोवत रहई । इकचण्डाल इक शूद्र जो अहई ॥ गाजी पीठपर बैठ रहे सोई । ताकर दोष कछू ना होई ॥

दो०-जो कछु पूछेउ अर्जुन, सो मैं दीन बताय ।
धनितोहारिजगमहिमा, सबगुणबसेउरआय ॥

चौ०-अर्जुन बात सुनो चित लाई । रामनामते सब सुख पाई ॥ निश्चय नाम हृदयमों जाने । और बात कछु चित ना आने ॥ जो जाने मोहिं हिरदै माहीं । ताकर धन्य हृदय तनु आहीं ॥ जो प्राणी मोहिं चित नहिं लावै । मृतक समान मोहिं कहँ भावै ॥ असुरनके नामै विष होहीं । बहुतक

बात कहौं का तोही ॥ साधूसंग अलभ सुख पावे । देखत ही दुख मूल नसावे ॥

दो०अर्जुनछोड़्योकपटसब, भज्योभक्ति भगवंत ।
आधा अंग हमार है, तब भाष्यो सब अंत ॥

चौ०—अर्जुन कहैं सुनो भगवाना । तुमहिं छाँड़ि जानो ना आना ॥ नाम अधार अहै प्रभु मोरे निशिबासर सेवो कर जोरे ॥ मोहिं सेवक जानो मनमाहीं । अवरो इक शंका प्रभु आहीं ॥ पाप पुण्य सब यहि संसारा । स्तुति को करि सकै तोहारा ॥ इन्हकर भेद कहो यदुराई । जिन्हकर वंश नाश होइ जाई ॥

दो०—कौन पापते स्वामिजू, वंशनाश होइ जाय ।
कृपा करो गोसाइँजू, सो मोहिं कहौ बुझाय ॥

चौ०—सत्य वचन सुनु कुन्तिकुमारा । यदि बातनकर करोविचारा॥जौनत्रियाके सतनारहई । निशिदिन परपूरुष मन धरई ॥ श्रीस्वामीकहँ

चित नहिं लाई । बात कहत उत्तर ना देई ॥ पहिले दुइ कुल अपयश पावै । प्राण अन्त यमलोक सिधावै ॥ और कथा सुन अर्जुन सोई । वंश-नाश जेहि कारण होई ॥ सत्यवचन बोले नहिं प्यारा । चितमों बसै सदा परदारा ॥ सभा बैठ परनिन्दा करई । कान लगाइ ठाकुरसों कहई ॥ परधन काढ़ द्रव्य जो देई । सो सन्ताप अपने शिर लेई ॥ जेहिं लेइ देई सुखसों खाई । इन्ह-कर वंशनाश होइ जाई ॥ अर्जुन कहै सुनो यदु-राई । ठाकुर होय जो करै मँदाई ॥ ऊँच नीच ना करै विचारा । सदा अनीति रहै परदारा ॥

दो०—परजहिंसदा सतावई, पापपुण्य नहिं जान ।
वंशनाश हो ताहि कर, सुनु अर्जुन सज्ञान ॥

चौ०—अर्जुन सुनो एक चित लाई । जेहि घर गाय होय अधिकाई ॥ गर्व करै तो सकै न हेरी । रोगव्याधि जो गायन पेरी ॥ ताकरे वंशनाश

होइ जाई । सुन प्रथमै तुम मन चित लाई । सुन अर्ज्जुन जो पूछो मोहीं । आदि अन्त समुझावों तोहीं ॥

दो०—अर्ज्जुन कहा गोसांइजू, पायउं सबकर अंत ।
पांच रत्न जग कहत हैं, वर्णहु सो भगवंत ॥

चौ०—श्रीगोविंद कहै शुभ बानी । सुन अर्ज्जुन तोहिं कहौं बखानी ॥ ठाकुर है सबको सुख देई । दुख संकट अपने शिर लेई ॥ मीठे वचन सो सब दिन भाखे । दाया धर्म हृदयमों राखे ॥ भाव भक्तिसों भाषण करई । करै सहाय वचन शुभ करई ॥ परे अकाल प्रजा प्रतिपाले । दुःख परे तो सत ना हारै ॥ शक्ति होय तो देइ पहुँचाई । आश निराश कबहुँ न जाई ॥ ब्राह्मण गायकी रक्षा करई । नेम धर्म अपने मन धरई ॥ उत्तम नारि गांवमों देखै । जस कन्या अपने

घर लेवै ॥ दंडभंड करि कछु न लेई । पापीके द्रव्य कैसेहु नहिं लेई ॥

दो०—यहिलक्षण कर ठाकुर, भक्तिभाव कछुजान ।
एक रत्न सो अर्जुन, सत्य कहैं भगवान ॥

चौ०—अवर रत्न सुन कुन्तिकुमारा । तासों वचन कहौं निरुआरा ॥ जौन त्रिया निश्चल चित होई । धर्म कर्म चित राखै सोई ॥ स्वामी केर करै नित पूजा । और पुरुष नहिं जानै दूजा ॥ माता पिता स्वामिकर होई । आपन करिकै जानै सोई ॥ ब्राह्मण गाय देवसम जानै । भक्ति भाव करि आदर मानै ॥ भक्तजन देखि विष्णु सम जानै । यह अपने मन निश्चय आनै ॥ भिक्षुक आय निराश न जाई । जो कछु जुरै सो दे पहुँचाई ॥ पतिव्रता सो सती कहावै । आपु तरै दुइ कुल तरि जावै ॥

दो०–यहिलक्षणकर भामिनी, सुनु अर्जुन चितलाय
एक रत्न सो जगतमहँ, सत्य कहे यदुराय॥
चौ०–अर्जुन सुनो कृष्ण अस कहई। और रत्न पृथ्वीमों रहई॥ जौन नरा रण होवे शूरा॥ धीरज साहस मुखको पूरा॥ ताकर स्वामि जो रणमहँ हारे। स्वामीकर संकट सो टारे॥ लागे घाव न माने हारी। संकट परै न देवै गारी॥ जियत रहे तो फेर ले आवे। जूझे स्वामीकार्य सिधावे॥
दो०–एक रत्न इह शूरमा, अर्जुन जानो सोय।
जियत जगत यश पावै, मुये मुक्तिगति होय॥
चौ०–सुन अर्जुन जौ पूछेउ मोहीं। औरौ रत्न कहों मैं तोहीं॥ भाग्यवन्त नर जगमो कंई अन्न धन्न संपूरण होई॥ प्रथमैं सावधान गृह रहई। अहंकार कबहूं ना करई॥ आपन कुटुम जहां लगि जाने। माया गर्भ बीज ना

आने ॥ भाई बंधु आवे जो कोई । यार दोस्त बैरी किन होई ॥ बाहरको आवै महमाना । ताको बिदा करै सन्माना ॥ सबकर आदर करै बनाई। बिदा करै बहु प्रीति बढ़ाई । दुखित देखि चित दाया करई । भक्तहिं हमारि हृदयमों धरई ॥ गो ब्राह्मण देवन सम जाने । कुल कुटुम्बकी लाज न आने भक्तहिं देखि विष्णुसम पूजे । अपर देव नहिं जाने दूजे ॥ परनिन्दा परवाद न जाने । परत्रियकहँ जननी सम माने ॥ नेम धर्म दानहु कछु करई । कछु कछु वेद पुराणहु सुनई॥

दो०—यह लक्षण धनवन्तकर, सुनिये कुन्तिकुमार
एक रत्न जग जानिके, निश्चय यह संसार ।

चौ०—इतना भक्त मोर जो आहीं । सो तु जानत हौ मनमाहीं ॥ तेहिकर कामै करों बखाना। मैं अपने मन तेहिको जाना ॥ नाम हमार जो दिन राती । ताकहँ जानो तुम बहु भांती ।

दो०-जहँ लगि सिरजा स्वामी, सबकेआस तोहार ।
तेहिमों कवन श्रेष्ठ प्रभु, सो मोहिं कहो विचार ॥

चौ०-सुन अर्जुन प्राणी जेते आहीं। जेहि हित मोर कहो तोहिं पाहिं ॥आन्नदान दुर्भिक्षमों करई। सो प्राणी मोर चित रहई॥तिरियासती जगत भई कोई । मोरे चितमों ब्यापै सोई ॥ रणमों शूर जूझ कोइ जाना ॥ सो मोहिं सांच कहो भगवाना ॥

दो०-यह प्राणी जो अर्जुन, सो तो बसै मोरे चित्त ।
और एक मैं जानो, ऋणसों रहै निश्चिन्त ॥

चौ०-तब अर्जुनमनकीन्हविचारा।स्तुतिकरिकै विनती अनुसारा ॥ विनती मोरि सुनो यदुराई । व्यासजन्म सुनते सुधि आई॥ब्रह्माकर नाती सो अहहीं। तुमसों भेद छिपा कछु नाहीं॥ यह संशय होहिं नंदकुमारा। केवटतनय कहे संसारा ॥

दो०-आदि पुरुषतुम स्वामी, जानो सबकर अन्त ।
व्यासदेव केवट तनय, कहो कवन बिरतंत ॥

चौ०—सुन अर्जुन समुझावों तोहीं । कथा पुरानन पूँछेउ मोहीं ॥ यह संशय तोहिं कहौ बुझाई ॥ तो तो मोर मौसि सुतभाई ॥

दोहा-व्यासजन्म तोहिं भाषों,सुन अर्जुनचितलाय।
अष्टादश पुराणकर, मूलधामते आय ॥

चौ०-श्रीगोविंद प्रकाश तब कियऊ । व्यास जन्म जवनी विधि भयऊ ॥ सरयूनदी पश्चिमते आई । आपण रूप धरे इकठाई ॥ ताहि समय गृह राजा गयऊ । विधिसंयोग भेट तहँ भयऊ ॥ युवती रूप देखि नृप मोहा । कीन्हेहुँ इन्हकहँ कीन्ह बिछोहा ॥ राजा पुनि ताकहँ धरि लीन्हा । हर्षवंत होय रतिरस कीन्हा ॥ राजा बहुरि अन्तपुर गयऊ । केतिक दिन यहि बात न भयऊ ॥ कन्या देवनदी भै जाई । राजा कहँ दीन्हा पहुँचाई ॥

दोहा—सोनिरवंशीनृप तबहिं,हितकरिकन्यालीन्ह ।
सो पुनिजायअन्तहपुर,आनँद बधांवा कीन्ह ॥

चौ०-अर्जुन सुनो मोर सतभाऊ। गर्भभवन कन्याकरनाऊ॥वर्षसातकी भई कुमारी।वरचिन्ता नृपमनहिं विचारी॥ दास रामराजा इक आही। कन्याकहँ पुनि ताहि विवाही॥ करि विवाह राजा लै गयऊ। यौवनवती त्रिया जब भयऊ॥ आशिवन मास पक्ष उजियारा। पितृ काज करही संसारा॥ जेहि दिन पितृकाज नृप होई। तेहि दिन रजोवती मैं सोई॥ सुनि राजा जिय चिन्ता लाई। दरबानीकहँ लीन्ह बुलाई॥ पण्डित यहँ ले आवहु जाई। ब्राह्मण कहै करौं सो भाई॥

दो०-पंडित विप्र बोलाइ कै, भाषा सब व्यवहार।
पितृकाज त्रियरजवती, तेहिकरकौनविचार॥

चौ०-ब्राह्मण कहै पितृकर काजा। वर्षरोजमों आवै राजा॥ आजुहि पितृकाज नृप होई। और लग्न धरि सकै न कोई॥ राजा कहा ढील अब नाहीं। करो समान सबै कछु आहीं। पितृकाज जब विप्र लगाये। राजा तुरत शिकारहि जाये।

अर्जुन सुनहु विधि संयोगा। हरिणा हरिणकेर रसभोगा ॥ देखत मोहित भयउ भुआरा॥कन्द्रप त्रासि भे तेहि बारा ॥

दो०—दोना एक बनाइ नृप, बीजधरा तेहिमाहिं ॥
चील्हहि एक बुलायकै, सौंप दीन्हतेहिपाहिं॥

चौ०—राजाकेचील्ह लेजावहु।राखनरानीकहँ पहुचावहु ॥ कहेउ वीज राखहु ऐसोई ।गर्भ रहैतो बालक होई ॥ इही विधि चील्ह तुरत ले जाई। नदी बीच औरै भै आई ॥ एक चील्ह ऊपरते आई। दोना आध फार ले जाई॥ दुइ बुन्द बीज सरित च्वैपरेऊ।मछली एक ताहि लिलि गयऊ॥ गर्भवन्त मछली भई आई।खेलशिकार नृपति गृह जाई ॥ पितृ काज तब कीन्ह भुवारा । जो कछु राजनके व्यहारा ॥ इहि बातन कछु अन्त न परी । केवटजाल मछलि सो परी ॥ लै मछली राजाकहँ दीन्हा । राजा बहुत प्रेम करि लीन्हा॥ कहिन कि मछली उत्तम आही । जेवन हेतु

बनावहु ताही ॥ लेके मीन बनावन गयऊ । तब इक बालक कन्या भयऊ ॥ हँसिके बालक भाषो तबहीं । बोले नृप जो राखहु अबहीं ॥ दासी नृप सब अचरज कीन्हा । मछलीगर्भ उतर कस दीन्हा ॥ राजा मछली फेर मँगावा । अपने आगे बैठ चिरावा ॥ राजा निरखी देखहि ताही । यक बालक यक कन्या आही ॥ राजा बहुत हर्ष मन कीन्हा । बालक ले रानीकहँ दीन्हा ॥ केवटकहँ नृप लीन बोलाई । कन्या लेके ताहि सौंपाई ॥ आ पुत्री केवट सो आहीं । कन्या देखि हर्ष मन माहीं ॥ जो बालक राजा लै राखा । मच्छ-नरायन नाम तेहि भाखा ॥ राजा भयउ राजके अन्ता । अब सुन कन्याकरविरतन्ता ॥ कन्यारत्न जो केवट लीन्हा ॥भगवतीनाम ताहिको दीन्हा॥

दो०-तेहिकन्याकहँ अर्जुन, केवट अस मनदीन्ह।
जीव आतमा जानिके, सेवा बहुविधि कीन्ह ॥

चौ०-सेवा करत बहुत दिन गयऊ । यहि

विधि वर्ष सातके भयऊ ॥ केवट घाटकेर घट
वारा । जो कोई जाइ उतारे पारा ॥ नावपर
बैठि कन्या नित रहई । आपन कर्म सिखावत
तहँई ॥ सुखसुख सों केतक दिन गयऊ । इक
दिन केवट व्याधित भयऊ ॥ केवट व्याधित
घरहिं सिधावा । घाट सौंपि कन्याकहँ आवा ॥
कन्या बैठि आपने भाऊ । विधि सँजोग मुनि
पराशर आऊ ॥ पराशर मुनि आसनको जाय ।
देखा घाट केवट नहिं आय ॥ फिर देखा कन्या
इक आही । ऋषी वचन भाषा तेहि पाही ॥
कहिन कि कन्या देउँ कछु तोही । नदी पार
उतार ते मोहीं ॥ कन्या कहै अन्य ना लेऊँ ।
बैठहु नाव पार करि देऊँ ॥ पिता दुखित है मोर
गोसाँई । दया करो व्याधि क्षय जाई ॥ बोले
ऋषि भयऊ सब काजू । पिता तोहार नीक भो
आजू ॥ तुम अपने मन शोच न मानहु । वचन
हमार सत्यके जानहु ॥ पिता तोहार नीक है

जाई । अवशि रोग व्याधी क्षय जाई ॥
दो०-इतना भाषि ऋषीश्वर, बैठि नावपर जाय ।
कन्या बैठी डाँड लेइ, दीन्हेसि नाव चलाय ॥
चौ०-थोरी दूर नाव जब जाई । उत्तम बात ऋषै चित आई ॥ उत्तम घड़ी अहै इह बारा । और त्रिया नहिं साथ हमारा । इह बेरा जो सो रति माने । ऐसो सुत होय लोक तिहु जाने । चारि वेद मुखपाठ बखाने । अष्टादश पुराण सो जाने ॥ तब पारस मुनि कह्यो विचारी । सुनो वचन केवटकी बारी ॥ जगमों सो तोहार यश रहही मानो वचन जौन हम कहही ॥
दो०-हृदयविचारेउ परममुनि, कहा वचन परमान ।
सुंदर सुनहु सुलोचनि, देहु मोहिं रतिदान ॥
चौ०-यह सुनि कन्या बहुत लजानी । ऋषि सन तब बोली मृदुबानी ॥ देह गंध मोर मच्छ समाना । हम अबला कछु भेद न जाना ॥

दो०–कहादेखि मोहिं रीझेउ, कीन्हा चहहुप्रसंग।
तुम्हैंयोगहमनाहिं हैं, केहि विधिदे हम अंग॥

चौ०–तब ऋषि बोले वचन रसाला । इह जनि शोच करसि तुम बाला॥हम आज्ञा दीन्हा भगवती । होहु तुरंत तुम यौवनवती ॥ काय तोहर सुगंध बसाई । बास चार कोसन लग जाई ॥ योजन गंध नाम तोहिं दीन्हा । होहु तुरत हम आज्ञा कीन्हा ॥ ऋषि वचन को मेटै पारा । भयउ तुरंत न लागेउ बारा॥कह्यो कि रति देहु राजकुमारी । औरों मैं कछु कहौ विचारी॥

दो०–सुंदरि कहा ऋषीश्वर, तुम आज्ञा शिरलेउँ ।
दोनों दिशा मनुष्य हैं, कैसे कै रति देउँ ॥

चौ०–तब ऋषि अपने मनहिं विचारी।कुहिरा जन्म लीन्ह औतारी ॥ अस कुहिरा भो कहा न जाई । दिनते तुरत रात होई आई ॥ ऋषि अति हर्षवंत मन कीन्हा । रतिरस दान नावपर कीन्हा॥दिये दान रति यक क्षण भयऊ । व्यास-

जन्म तेहि ठौरहि भयऊ ॥ जन्मत भये वृद्ध भई काया। कही न जाय विष्णुकी माया ॥ अर्जुन सुनो कहैं भगवाना । चारि वेद मुखपाठ बखाना ॥

दो०-व्यासजन्मतोहिंभाषेउँ,सुनअर्जुनचितलाय ।
जन्म जन्मकर पातक, कथापढ़त क्षय जाय ॥

चौ०-सुन अर्जुन तिनके व्यवहारा । ऋषी उतर गे पहिले पारा ॥ व्यासदेव तब बैठे जाई । प्रथम ज्योतिकी सुस्तुति लाई ॥ ऋषि सुन्दरीके रस लीन्हा । कन्यारूप ताहिको दीन्हा ॥ मुनि स्नान करि कीन्ह पयाना । ताकर बिदा कीन्ह सनमाना ॥ सो कन्या अपने घर जाई । ऋषि पाराशर बैठेउ आई ॥

दो०-दास राम नृप कन्या, मीनगर्भ अवतार ।
यहिविधि जन्मे व्यासमुनि, सुनहुकुन्तिकुमार॥

चौ०-तब अर्जुन उठिकै कर जोरी । परब्रह्म सुनु विनती मोरी ॥ अष्टादशपुराण मुनिकीन्हा ।

ताकर अर्थ कहौं हौं दीना ॥ आदिपुराण कौन प्रभु भाषा । अष्टादश बेवरा करि राखा ॥

दो०–आदिपुराण जो भाषेउ,मिटा मोर अब शोक।
अष्टदश पुराणमों, केतिक हैं सो श्लोक ॥

चौ०–सुन अर्जुन जो पूछौ मोहीं । एक एक कहिं भाषों तोहीं ॥ अष्टादशपुराण प्रभु भाषहिं । मनमों अर्जुन ज्ञान संभारहिं ॥ प्रथमे ब्रह्मपुराण जो भयऊ । दशसहस्र श्लोकते कियऊ ॥ पद्मपुराण जु कीन्ह अनूपा । पचपन सहस्र श्लोक निरूपा ॥ तेहि पाछे भो विष्णुपुराणा । तेइस सहस्र श्लोक बखाना ॥ शिवपुराण तबहीं निर्माई। चौबीस सहस्र श्लोक बनाई ॥ श्री भागवत पुराण बखाना । सहस्र अठारह श्लोक बखाना॥ पुनि नारदपुराण जो भाखा । पचीस सहस्र श्लोक तेहि राखा ॥ पुनि स्कन्द पुराण बनावा । इक्यासी सहस्र एक सौ श्लोक बनावा ॥ मार्कण्डेय पुराण जो आही । नौ सहस्र श्लोक तेहि

माहीं ॥ तेहि पाछे भयो अग्निपुरान । पंद्रह सहस्र चारसौ माना ॥ पुनि भविष्यपुराण उप-राजा । चौदह सहस्र पांच सौ श्लोक विराजा॥ ब्रह्मवैवर्त लिखे मन कीन्हा ॥ अठारह सहस्र श्लोक तेहि कीन्हा ॥ लिंगपुराण सुनो धनुधारी। ग्यारह सहस्र श्लोक विचारी ॥ वायुपुराण सुन कुन्तिकुमारा। चौबिस सहस्र श्लोक सँवारा ॥ कूर्मपुराण कह्यो भगवाना। सत्रह सहस्र श्लोक बखाना ॥ वामन पुराण नाम जों आहीं ।दश सहस्र श्लोक तेहिमाहीं ॥ गरुड़पुराण सुनो बिर-तंता। उन्निस सहस्रश्लोक भगवन्ता ॥ मत्स्य चतुर्दस सहस्र जो आहीं। व्यासदेव विरच्यो जगमाहीं ॥ ब्रह्माण्डपुराण अठारह आहीं। बारह सहस्र श्लोक तेहि माहीं ॥

दो०—एक एक करि भाषेउ, पुनि कीन्हा सब थोक।
अष्टादशपुराणमों, चारी लक्ष हैं श्लोक ॥

चौ०—अष्टादशपुराण व्यास मुनि कीन्हा।

अर्जुन तोसों सो कहि दीन्दा ॥ चारि लक्ष श्लोक तेहि माहीं । इनमों घाट बाढ़ कछु नाहीं ॥ जो कोइ घाट करे इनमाहीं । लिखनहारशिर दोष पराहीं ॥ सुन अर्जुन तोसों मोरि दाया । तन मन इक दूसरी ना माया ॥ तेहि कारण कछु अन्त न राखौं । उत्पति प्रलय जहां लगि भाखौं ॥ जीवरूप सबके घट रहऊँ । सुन अर्जुन तोसों सति कहऊँ ॥ बड़े जीवमों बड़ो प्रकाशा । छोट जीवमों छोट प्रकाशा ॥ गाढ़परे तो सुमिरे नाऊँ । तेहि ठौर प्रकट हो जाऊँ ॥ संकट काट उबारो ताहीं । नहिं पतिआसि कहों तोहिं पाहीं॥

दो०—गुप्त कथा सब जानेऊ, निर्मल भयो शरीर।
संकटमों केहि राखेऊ, सो भाषो यदुवीर ॥

चौ०—सुन अर्जुन जेहि संकट परई । निश्चय नाम मोर चित धरई ॥ तेहिकर संकट टार बनाई । दुष्ट मारि तेहि लेऊँ छोड़ई ॥ जेहि जेहि कर मैं संकट टारा । सो तोहिं भाषो कुन्ति-

कुमार ॥ एक समय विधि औसर साजा । पानी पियन गयो गजराजा ॥ तृषावंत जलभीतर जाई । ग्राह एक तहँ घरा बनाई ॥ गजकर गर्व चला कछु नाहीं । कालसमान घरा अस ताही ॥ खैंचि ग्राह ले चला निदाना । ह्वैगो गज तब मृत्यु तुलाना ॥ अतिहि कष्ट गज भयो दुखारी । महाविकल ह्वै कहेसि पुकारी ॥ कृपासिन्धु मोहिं लेउ उबारी । परेउँ अथाह अगम जल भारी ॥ हम सत्यभामा खेलहिं पासा । पुरी द्वारिका वैकुण्ठ निवासा ॥ यहि अन्तर गजराज पुकारी । सत्यभामा कह पांसा डारी ॥ सत्रह सहस्र योजन गजराजा । ताकी कैसे सुनो अवाजा ॥ तब सत्यभमा कही रिसाई । खेलत माया करो गोसाई ॥ केहि राखेउ को है इह ठाईं । भूलि जायकै करो उपाई ॥ पांसा मोर परा तुम देखा । मैं अपने खेलब करि खेला ॥

दोहा०-श्रीकृष्ण हँसि बोलेउ,तुम जनि मानहु मंद ।
ग्राह गहा गजराज कहँ, ताकर काटो फंद ॥

चौ० तब सत्यभामा अचरज माना । इह सब झूंठ अहै भगवाना ॥ मैं जानत तुम्हें गोपाला । दया धर्म तुमहीं नँदलाला ॥ सत्रह सहस्र योजन गजराजा । ताकर कैसे सुनो अवाजा ॥ जो तब सत्य अहै इह बानी। मोहिं देखावहु शारंगपानी॥ तबहीं गरुड हंकारेउबीरा । तेहि चढ़ गयो सरोवर तीरा ॥ ग्राह परा देखा जलमाहीं । चक्रघाव सों मारा ताहीं ॥ हस्ती ठाढ अहै जलतीरा । थरथर कांपत सकल शरीरा ॥ जब सत्यभामा देखा जाई । तब बहुविधिके स्तुति लाई ॥ द्रौपदीकी लज्जा मैं राखी । सोअर्जुनतुम देखा आंखी॥ संकटते प्रहलाद उबारा । सो तुम जानो कुंतिकुमारा ॥ हर्णाकुशको उदर विदारा । आंत निकाल गलेमों डारा मार्कंडेय मुनो हमपाहीं । ब्रह्मा कर नाती सो अहही ॥ तीन लोक जब परलय

भयऊ बूड़े लाग यादू मोहिं कियऊ॥ कहेउकि बूडेउँ शारंगपानी। गर्भांतर राखेउँ तेहि आनी॥ धन्य गरुड़ विनतासुत राखा। अस्सी युग मोहिं पीठपर राखा॥ तेहि ऊपर तन सके न सँभारी। अक्षयवट तर दीन्ह उतारी।

दो०—व्याकुल भये विनतासुत, जानेउमनमहँतेहि।
तेहँ पुनि राखेउ गर्भमहँ, बैठ रहा वट तेहि॥

चौ०—अर्जुनकहैसुनोयदुराई। मोरे चितकछु शंका आई॥ तुम्हरे कैसे उदर समाना। संशय बड़ उपजे भगवाना॥ मन अर्जुन तोहिं कहों बुझाई। सबमों मैं मोहिं सबै समाई॥ सात समुद्र पृथिवी नौ खंडा। मेरु सुमेरु सकल ब्रह्मण्डा॥ कहँलगि सृष्टि कहौं तोहिं पाहीं। तीन लोक मोरे उरमाहीं॥ पक्षी एक गरुड तैं भाखा। पूँछेउ स्वामि कैसे तुम राखा॥ टार दिये सुख ऊदर-माहीं। सो देखो मोरे घटमाहीं॥ भक्ति भाव मैं जानहुँ तोरा। औ मौसीसुत भाय तू मोरा॥

तुमसन भेद कहा समुझाई । औरके बूते जानि न जाई ॥ अर्जुन कहै सत्य यदुराई । मैं तोरा मौसीसुत भाई ॥ पायउँ भेद अज्ञानहिं मेटी । कुन्ती उग्रसेनकी बेटी ॥

दो०—अर्जुन कहा गोसाईजू, सो तुम कहो उपाय॥
तुम्हरे चरणकमल तजि, चित्त अंतनहिंजाय ॥

चौ०—अर्जुन वचन सत्य सुन मोहीं । मैं अपना हितु जानो तोहीं ॥ बहुत भाँति का कहों बुझाई । नाम मोर भजही चित लाई ॥ जो मम नाम भजे चित लाई । तेहि समान अर्जुन ना कोई ॥ संकट कोटि जों सहै शरीरा । नाम मोर नहिं छाँड़े वीरा ॥ धन औ द्रव्य न मनमों जाना । दुख सुखके शंका नहि आना ॥ एक जन्म सुख पावे सोई । कोटिन जन्म ताहि सुख होई ॥ चित दे नाम जपे जो वीरा । ताके पाप न रहै शरीरा ॥ नाम ब्रह्म ज्योती चित जाना । सो प्राणी है देव समाना ॥ अर्जुन सांच

सुनो हम पाहीं । नाम भजन बिनु और न आहीं ॥ कोटिन तीरथ व्रत जो जाना । गया प्रयाग पिण्ड कर दाना ॥ नाहिंन अर्जुन नाम समाना । कोटिन सुमेरु सोना देइ जो दाना ॥ नाहिंन अर्जुन नाम समाना । काशी क्षेत्र करे जो स्नाना ॥ नाहिंन अर्जुन नाम समाना । गंगासागर जो करै स्नाना ॥ नाहिंन अर्जुन नाम समाना । कोटिन देवन जाय स्थाना ॥ नाहिंन अर्जुन नाम समाना । कोटिनक्षेत्र करे जो स्नाना॥

दो०—उदय अस्त सब जाके, चारि वेद मुख जान ।
कोटि कोटिगुण जाने, नाहिंन नाम समान ॥

चौ०—सुनहु अर्जुन पांडुकुमारा । नामकि महिमा लिखै विचारा ॥ वनस्पतीके कमल बनाई । घास पात सब दीन जराई ॥ राख समेटि समुद्रमों डारी। मथन कीन्ह बहुबिधि विस्तारी ॥ सात समुद्र कीन्ह मसिहानी । धरती कागज

कीन्ह भवानी । लिखत भूमि सब गई सिराई । नामकि महिमा कही न जाई ॥

दो०—इतनाकीन्ह्योसरस्वती,सुनअर्जुन चितलाय ।
महिमा मोरि न जा ने कोटिन करै उपाय ॥

चौ०—अब सुन अर्जुन कहों बुझाई । महिमा मोरि भक्त कछु पाई ॥ सो भवसागर जाने कैसा । कुसुमरंग अभ्रपर जैसा ॥ जो कछु तीन लोक मों आही । एको दृष्टि न आवे ताही ॥ सप्त पताल अपर ब्रह्मंडा । सात द्वीप पृथिवी नौ खण्डा ॥ तीन लोक अर्जुन दृढ आही । सो दर्पण अस देखे ताही ॥ चांद सूर्य दीपक सम जाने । कंद्रप कहँ मर्कटसम माने ॥ धनद समान धनी कोउ नाहीं । दुखिया सम जाने चित माहीं ॥ उँचास कोटि मारुत है कैसा । नासा पवन बहत हैं जैसा ॥ अर्जुन सुनौ कल्पतरु सोई । जानो एक वृक्ष है सोई ॥ सात समुद्र नीर जल भारा । सो जानो सातहु चिलुभारा ॥

इन्द्रसमान राउ नहिं आही। रंक समान बुझै अस ताही॥ गिरिसुमेरुको मनमों कहई। ढेला एक धरा जनु अहई॥ औरो रत्न जानही कैसा। मशक एक बैठो है जैसा॥ जलमों एक कीट जनु आही। इतना दृष्टि न आवे ताही॥ बृहस्पतिको मूरखकै माने। पुहुपसमान नखत गण जाने॥ वरुणरायको मनमों कहई। जलमों कीट जन्तु जस अहई॥ इतना दृष्टि न आवे ताहीं। नर बपुरा केहि गिनती माहीं॥ अर्जुन सुनो कृष्ण अस कहई। नामभंजनते इह कछु लहई॥ महिमा मोरि जो जाने कोई। ताकरि दृष्टि सुनो असि होई॥

दो०–महिमा मोरि जो जाने,मोहिं समानहै सोय।
सब मिथ्या करि जानेऊ, दृष्टि न आवैकोय॥

चौ०–तबउठि अर्जुनने स्तुति लाई। वचन हमार सुनो यदुराई॥ ऐसा मो कछु चित ना आही। नामकि महिमा केहि विधिपाही॥ सो जगजीवन

कहो बुझाई । जेहिते चित्त अन्तनाजाई ॥ जेहि विधिहोय मोर उद्धारा । सोमोहिंभाषोनंदकुमारा॥
दो०-तुममाया जानोनहीं, केहिविधि सेवों तोहिं ।
सो भवसागर स्वामि द्रुत, पार उतराहु मोहिं ॥
चौ०-अर्जुन सत्य सुनो हमपाहीं । तुम सम भक्त जगतमोंनाहीं ॥ताते ममकछु अन्त न माया । अन्तकाल चित राखो दाया ॥ नाम मोर हृदयमहँ जानहु।और बात कछु चित ना आनहु ॥ नामकि महिमा पूछेउ मोहीं । सो अर्जुन मैं भाष्यों तोहीं ॥ मोरभाव जो जाने कोई। केवल नाम हृदयमों होई ॥ यहि मों जात पाँत कछु नाहीं । मोहिं लीन सबते बड़ आहीं ॥
दो०-अर्जुन कहा गोसाइँजू, पावउँ सबकर अंत ।
मिथ्या जन्महै ताहिकर, विनाभक्ति भगवन्त ॥
चौ०-नामकि महिमा जान्यो स्वामी। श्री त्रिलोकके अन्तर्यामी ॥ इतना दिन मोहि मिथ्या गयऊ । कष्ट सकल अर्जुनके भयऊ ॥ आजुहि

निर्मल भयउ शरीरा। आदि अन्त जानो यदु-
बीरा ॥ कोटि जन्म वर पातक नाशा। प्रभुके
चरणकमलकी आशा ॥ तीन लोक सिरजा भग-
वाना। तुम्हैं छांड़ि जानों ना आना ॥ औ स्वामी
तुम गर्व प्रहारी। कौन स्तुति करि सके तिहारी ॥
चारि वेद मुखपाठ बखाना। आदि अंत है जहँ लगि
जाना ॥ रोम रोम मुख जिह्वा होई ॥ तदपि स्तुति
करिसकै न कोई। बात कहत हम कीन्ह ढिठाई। सो
मोहिं बख्शो श्रीयदुराई ॥ श्रीगोविंद राखि मोहिं
लीजै। केवल भक्ति अखंडित दीजै ॥ तुम्हरे चरण
कमलकी आशा। सो स्वामी मोहिं कहो प्रकाशा ॥
दो०—अर्जुन कहा गोसाइँजू, यह कीजे परकाश।
जन्म जन्मकर चितरहे, हरिचरणनकी आश ॥
चौ०—अर्जुन सत्य वचन सुनु मोहीं। गीता
ज्ञान कहौं मैं तोहीं ॥ आवागमनते निहचल होई।
कोटि कोटि पातक क्षय होई ॥ सबैशस्तर मथके
लीन्हा। रामरत्नगीता सो कीन्हा ॥ श्रीमुख अर्जुन

भाषा तोहीं। तुव समान कोउ प्रिय नहिं मोहीं॥ जब यह कथा चलै संसारा । तेहिकर गुण सुन कुन्तिकुमारा ॥ मानुष रहे बैठ जो कोई। मोक्ष मुक्तिकी प्रापति होई॥ श्रीमुख वेद पुराण यह गीता। क्षत्रिय पढ़े सो रणमों जीता॥ संत असंत पढ़े जो कोई। ज्ञानवान उत्तम गति होई॥ चित्त देइके जपत जो अहई। यमके दूत डरत सो रहई॥ निश्चय पढ़त नाम जो अहई। जहां जाय चिन्ता ना करई॥ गीता पढ़े सुनै जो काना। बन्दि होय तो छुटै निदाना॥ रोगहु व्याधि रहै जो लागा। गीता पढ़त दूर सो भागा॥ दुष्ट चोर ठग तहां न रहई। राजप्रजाकी रक्षा करई॥ जितने गुण गीतामों आही। आदि अन्त कहि सके न ताही॥ तीन दिवस जो पढ़े सुनावै। कोटि कोटि गुण कहत न आवे॥ देवनकेर पाठ यह गीता। मानुष पढ़े होय मन चीता॥ दुख दरिद्र सब जाय पराई।

गीता पढै सुन मन लाई ॥ राम रतन गीता प्रभु भाखा । सोई प्रेम तंतु करि राखा ॥ सुख गीता संपूरण भयउ । अर्जुनके संशय छुटि गयऊ ॥ अर्जुन कृष्ण गुसठ इक कीन्हा । रामरतन गीता करि लीन्हा ॥

दो०—श्रीकृष्ण अर्जुन मिलि, गुसठ अपूरवकी ह।
जिनके चरणकमल चित, कुशलसिंह सरलीन्ह॥

चौ०—श्रीमुख गीता अमृतवानी । गुरुप्रसाद भाषा रस आनी ॥ बुद्धि ज्ञान गुरु मोकहँदीन्हा। उत्तम ग्रन्थ देखिके लीन्हा ॥ नामभेद गुरु-मुखते पावा । दाना कीन्ह ज्ञान मोहिं आवा ॥ दुसरे कीन्ह साधुकी सेवा । तिनकी दयाते पाये मेवा ॥ देखेऊँ बूझि हृदयके माहीं । राम·नामते आन न आहीं ॥ काया माया मिथ्या जाना । पुनि पाये शंकर धरि ध्याना ॥ देखेउ जग कोऊ स्थिर नाहीं । मिथ्या करि जानो चित

माहीं ॥ धन सुत दास बंधु जो आहीं । ये दुख कर जाने मनमाहीं ॥ अनजानत कीन्हाउपकारा। त्राहि त्राहिके कीन्ह पुकारा ॥ जबहीं ते मन भयो उदासा । साधुचरणमहँ पूजे आसा ॥ प्रगट होय मुख कबहुँ न भासू । हरिकी दायामें विश्वासू ॥ यही भाँति राखो चित लाई । तब कछु ज्ञान हृदयमों आई ॥ इहिविधि दाया गुरु जब कियऊ । संशय छूटि अमल मन भयऊ॥

दो०-गुरु दयाल भो मोहिंपर, छूटिगये सबभर्म।
रामनाम चित जानेऊ, अपर न जानों कर्म॥
सब खोजे ना मिलि सके, ना केउ पावेश्वास ।
पाये अर्जुन भक्त जे, छुटी औरकी आस॥

इति श्रीअर्जुनगीता संपूर्ण ।

पुस्तकें मिलने के स्थान :-

१. खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
सातवीं खेतवाड़ी खम्बाटा लेन
बम्बई-४०० ००४

२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्या बाई चौक, कल्याण,
(जि० ठाणे-महाराष्ट्र)

३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक-वाराणसी (उ. प्र.)

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

